ईर्ष्या....

ईर्ष्या, जलन, द्वेष आदि ऐसे शब्द है जिससे इन्सान सामने वाले का नही अपना ही नुकसान करता हैं।

जिस तरह किसी लकडी में लगी आग दूसरी लकडी को जलाए न जलाए लेकिन खुद जलकर खाक हो जाती हैं।

इंसान तभी सफल हो सकता है जब उसके ह्रदय में सबके लिए प्रेम हो, जो सबके प्रति प्रेम और दया रखता है वही परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी होता है।

वरना कोई कितना विद्वान क्यों न हो सफल नहीं हो सकता, सफलता की पहली सीढी है सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार, वाणी और कर्म से किसी को दुख न देना, किसी को अपना गुलाम न बनाना, औरों का हक न छीनना आदि कर्म हमें सफलता की ओर ले जाते है अतः इन सबको अपने गुणों में शामिल करें।

ईर्ष्यालु व्यक्ति जहाँ भी रहता है सदैव अपना और दूसरों का नुकसान करता रहता है जैसे मोम स्वंय जल कर खत्म हो जाती है अतः ऐसे लोगों से बचकर रहना चाहिए।

जिसके अन्दर जलन की भावना नहीं होती है वही अपने काम को पूर्णतः लगन और समपर्ण के साथ कर सकता है।

प्रेम और त्याग के बल पर ही इंसान सच्ची सेवा कर सकता है।

अच्छाई और ईमानदारी हमारा मूल स्वभाव होना चाहिए।

शब्द अनमोल संपदा है, प्रेम और बैर इसी से जन्म लेते है , इसलिए राग,द्वेष, ईर्ष्या आदि विकारों से दूर रहे।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT